P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

नारी स्वरूप में व्याख्यायित प्रकृति श्रंगार–विजयवर्गीयी चित्रो के संदर्भ में

अमिता राज गोयल
वरिष्ठ सह आचार्य,
कला विभाग,
द आई.आई.एस.
विश्वविद्यालय,
जयपुर

कीर्ती सिंघल
शोधार्थी,
द आई.आई.एस.
विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

आत्मा, परमात्मा व प्रकृति तीनो ही बिम्ब एक दूसरे के पूरक होते है। जिनमे प्रकर्ति ही एक ऐसा तत्व है जो आत्मा व परमात्मा का मिलन कराने मे सहायक होती है। प्रकृति अर्थात श्रंगारित आनंद रूप ब्रह्म की ज्योति, त्याग भावना, भोगीनी व पूजनीय।

मुख्य शब्द : सर्वशक्तिमान, प्रकृति, सौन्दर्यधारणा

परिचय

प्रकृति के अनुरूप नारी की प्रकृति भी सदा परोपकारी व त्याग भावना से परिपूर्ण होती है। भारतीय सौन्दर्यधारणा में नारी तथा प्रकर्ति दोनो ही तत्व एक ही सौन्दर्य का अनुभव करते हुए रसलीन होते है, इसी कारण दोनो की सीमाए प्रायरू एक दूसरे मे मिल जाया करती है।

प्रकृति जीवन का प्रधान अंग है और उसी प्रकार प्रभु ने नारी को स्रजन शक्ति का वरदान देकर समाज के लिये उतना ही महत्वपूर्ण बना दिया है जितना कि वह स्वयं है। अतरू किसी भी कला मे उसकी पुनराव्रति होना स्वाभाविक ही है, इसलिये इसे सर्वशक्तिमान भी माना गया है। भारतीय काव्यशास्त्रियो ने इस सत्य को जाना और इतिहास के पन्नो मे इसका रूप अजर अमर कर दिया। उसे मात्रत्व, प्रेम, वात्सल्य, करूणा, क्रोध आदि सभी भाव से सम्बद्ध कर उसकी सुन्दरता व लावण्य को भी दर्शित किया। नारी की इसी पराकाष्ठा को बड़े–बड़े महाकवियो के साथ चित्रकारो ने भी अपने रंगो के द्वारा इसके भाव प्रस्तुत किये है।

इन चित्रकारो में वाश पद्वति के ख्याति प्राप्त चित्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय ने अपने चित्रकर्म मे सदैव नारी रूपी प्रकृति को श्रंगारित करने का प्रयास किया है। प्रकृति का जितना सरस व ललित वर्णन प्राचीन काव्यों व ग्रन्थो मे पढ़ने को मिलता है उससे कही अधिक ह्रदर्यार्जन चित्रण विजयवर्गीय की तूलिका से सुशोभित हुआ है। आप ही के शब्दो मे "नारी ब्रह्म की आल्हादिनी शक्ति है कृष्ण ब्रह्म है और रासेश्वरी माया व दोनो का मिलन रासलीला है रास से ही रस का जन्म होता है। रस ही ब्रह्म है और रस ही आनंद स्वरूप । चित्रों मे श्रंगार ही रस है और नारी बिना चित्रों का श्रंगार ही अधूरा है"(चतुर्वेदी, 2005)। बचपन में ही काव्यो के गहन अध्ययन ने आपकी चिन्तन शक्ति को इतना प्रबल बना दिया जिनका परिणाम व सौन्दर्य हम आपके सभी नारी प्रधान चित्रों में देखते है। आप प्रकर्ति चित्रण करते समय उसकी आत्मा मे इतना प्रविष्ठ हो जाते थे कि उसके एक एक अंश में नारी की खोज सदैव बनी रहती। कहते है ना कि ईश्वर इस संसार के हर एक वस्तु मे विद्यमान है यह बात केवल स्वंय की चिंतन शक्ति पर निर्भर करती है अगर हम इस बात पर विश्वास करते है तो अवश्य ही परमात्मा हमे हर उस वस्तु मे दिखाई देगा जिसको कि हम अपने नेत्रो द्वारा देख रहे है। विजयवर्गीय द्वारा चित्रित प्रत्येक चित्र किसी न किसी रूप मे प्रकर्ति की व्याख्या करते लाभान्वित होते है। विजयवर्गीय के चित्रों की एकमात्र विशेषता यही है कि प्रकर्ति के एक एक उपादान को स्त्री रूप मे नियोजित कर चित्रों की आभा और दृढ़ कर दी हैयथा शकुन्तला को संपूर्ण हरियाली से पूर्ण वन पर्यावरण के मध्य उभरे प्रस्तर पर नदी किनारे बैठे दिखाया है। हां शकुन्तला का यौबन ऐसा लग रहा है जैसे नाजूक सी लता टूटकर उस पत्थर पर पड़ी हो। इसके होठ लता की कोपलो के समान, दोनो भुजाए व्रक्ष की कोमल शाखाओं के समान जान पडती है, पूरा यौवन एक लुभावने फूल के समान भासित होता है।

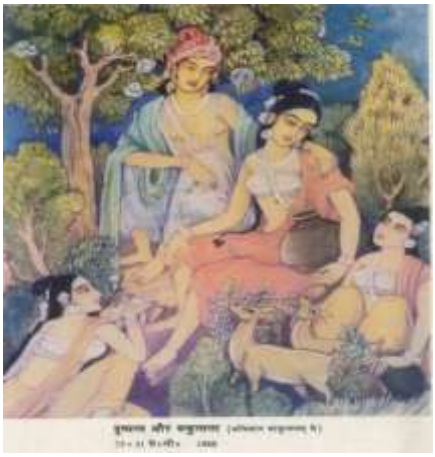

प्रकृति में जहां जहां चित्रकार को सबसे सुन्दर अंश दिखाई पडा वहां से उन्होने उसके अंश को लिया और स्त्री रूप में संयोजित कर दिया। काव्यो की नायिकाए उर्वशी, मेघदूत की यक्षी, राधा, शकुन्तला, पार्वती व रति आदि सभी का जितना लावण्यमयी वर्णन काव्यों में हुआ है उससे भी अधिक मर्मस्पर्शी दर्शन विजयवर्गीय के चित्रों में हम पाते है क्योकि "नारी देह मे जो सौन्दर्य प्रकाश करता है, वही प्रकर्ति के भिन्न–बिन्न पदार्थ मे प्रतिबिम्बित है और जिस प्रकाश से प्रकर्ति के नाना रूपी छवियां विश्व में अपना सम्मोहन बिखेरे हुए है, वही प्रकरण नारी–रूप में फूटकर चराचर स्रष्टि को बन्दी बना देता है" (तिवारी, 1988)।

जिस प्रकार एक नारी का सौन्दर्य उसके अंलकारो से होता है उसी तरह प्रकर्ति का श्रंगार उसके हर एक अंश मे है जैसे पत्तियो में, लताओ में,फूलो में, नदी के जल में, पहाड़ो से गिरते झरने में, बादल में, वनों में, पत्थरों में इत्यादि। यही कारण है कि नारी रूप के वर्णन मे आपकी द्रष्टि प्रकर्ति–जगत का अनुसंधान करने लगती है और आपकी नारी की व्याख्या में भी बिल्कुल वैसा ही भाव सौन्दर्य दर्शित होता है। जिस प्रकार आंखे मछली के समान, भुजाये व्रक्ष की कोमल शाखाओ के समान, होठ लता की कोंपलो के समान जान पडता है ऐसा ही नारी सौन्दर्य चाहे वह मेघदूत की यक्षी हो, अभिज्ञान शाकुन्तलम कि शकुन्तला या कुमारसंभव की पार्वती सभी मे एक समान आपने दर्शाया है।

कालिदास के काव्य के भातिं ही विजयवर्गीय के चित्रों में नारी व प्रकर्ति दोनो में एक ही सौन्दर्य तत्व का रस भोग होता है। मेघदूत की यक्ष प्रिया का सौन्दर्य प्रकर्ति के भिन्न–भिन्न रूपों अथवा पदार्थों की विशिष्टताओं पर संकलित कर निर्मित किया गया है। काव्यों के पात्र के अन्तस मे छिपे भावों को उनके मुखमन्डल, हाव भाव, रंग मुद्रा आदि के द्वारा पहचाना जा सकता है।

"जालोद गीर्णेरूपचित वपुरू केशसंस्कार धूपै –
बन्धुपीव्या भवनशिरिवभिर्दत न्रत्योपहाररू ।
हम्येष्वस्थारू कुसुमसुरभिष्वध्वाखेदं नयेधा
लक्ष्मी पश्यल्ललितवनितापाद्रागाडि तेषु ॥ 34

चित्रकार विजयवर्गीय जी ने इस श्लोक का चित्रांकन उतने ही सुंदर रूप में किया है जितना कि पुष्पों से सुशोभित वनिताओं को आपकी मनोव्रति ने प्रकर्ति को नारी रूप में जीवंत कर दिया है। यहाँ मेघ व प्रकर्ति, आत्मा व परमात्मा का मिलन का अवलोकन मौलिक रूप में द्रश्यमान होता है, जब यक्ष मेघ को कहता है कि हे मित्र मेघ! जब तुम थक जाओ तो वहाँ के महलो में प्रकर्ति रूप सुंदर वनिताओं के रूप का भोग कर अपनी थकान दूर कर थोडा बरस जाना और उज्जैन के महलों की शोभा बढाने वाले वहाँ के उद्यान व प्रकर्ति उपादानों

की भी सन्तप्ति करना। चित्र में दर्शित नारी रूप श्लोक में अवस्थित सुंदर वनिता ही है जो अपनी केश रूपी सुन्दर लताओं को उन महलों से निकलते धुंए से सुरभित कर रही है और दूत रूपी बादल चुपके से उसके सुंदर रूप को निहार कर मेघ के कहे अनुसार पुष्ट (आनंदित) हो गए है।

वहीं एक चित्र में रामगोपाल जी ने गभींरा नदी के सौन्दर्य को एक नारी रूप में चित्रित किया है। यहाँ नदी के तट को उसके शारीरिक रूप में व उसके जल को पारदर्शी वस्त्रो के रूप में चित्रित किया है जो पानी की प्यास रखती है और वर्षा के लिये तडपती है पर जैसे ही बादलो का आगमन होता है वह प्रसन्न हो उठती है और बादलों रूपी अपने प्रेमी से मिलने को आतुर हो उठती है। सारा द्रश्य गंभीरा नदी और बादल में दिखाया गया है। विजयवर्गीय द्वारा किया यह चित्रांकन साद्रश्य को प्रकट

करता है क्योंकि उस नदी की तडप व मिलन की इच्छा की खुशी को उस नारी रूप में यथा संयोजित किया है।

आपके चित्रों को देखने से आभास होता है कि आप प्रकर्ति प्रेमी थे। प्रकर्ति को आपने बहुत निकट से देखा था। चित्र बनाने के सूत्रों का ग्रन्थ 'चित्रसूत्रम' के सभी सूत्रों का पालन विजयवर्गीय के नारी देह मे पूर्ण रूप से किया है। लम्बे चेहरे, ऊंचा ललाट, छोटे अधर, मछली के समान अधखुली आंखे, लम्बी अंगुलिया आदि सभी सत्ववान के परिचायक है। ठीक उसी प्रकार विजयवर्गीय जी का नेत्र रूपी मन इस बात को मानता था कि प्रकर्ति व नारी दोनो एक दूसरे के पर्याय है और फ़िर तूलिका पर आपकी पकड ने ही इस सत्य का ज्ञान चित्रों के द्वारा समाज को पहुंचाया।

संदर्भ सूची–

1. चतुर्वेदी, म. (2005). रामगोपाल विजयवर्गीयः एक शताब्दी की कला यात्रा. जयपुररू राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
2. तिवारी, र. (1988). महाकवि कालिदास. वाराणसीः चौखम्बा विध्याभवन.
3. भार्गव, द. महाकवि कालिदास (विचित्रम मेघदूतम). (द. भार्गव, Ed.)